Impact Factor (QJIF): 8.47 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 13/May/2026 **IJRAW:** 2026; 5(7):181-182 **Accepted:** 19/June/2026

जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों में राष्ट्र और नारी

[*1]डॉ. बबिता के

[*1]विभागाध्यक्ष एवं सह-प्राध्यापक, हिंदी विभाग, एस.एन.एम. कॉलेज, मलियंकरा, केरल, भारत।

सारांश

हिन्दी नाट्य जगत में जयशंकर प्रसाद के प्रवेश से पवित्तन हुआ। नन्ददुलारे वाजपेयी के अनुसार प्रसाद ने इतिहास का बन्धन स्वीकार करते हुए भी ऐसे पात्रों और चरित्रों की योजना की जो शत प्रतिशत ऐतिहासिक नहीं है। नाटकीय पात्रों में व्यक्तित्व-स्थापन या चरित्र विक्रयण का यह यत्न हिन्दी नाटकों के विकास की ऐसी कड़ी है जो प्रसाद को असाधारण महत्य प्रदान करती है। हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु युग से लेकर प्रसाद युग तक नारी समस्याओं को लेकर अनेक रचनाएं हुई हैं। उन सबमें नारी को केवल समर्पण, त्याग, कर्तव्य, सेवा आदि भाव देकर कहीं-कहीं उसके गुणगान किया गया है। जैसे-प्रताप नारायण मिश्र ने कलिकौतुक नाटक में पतिव्रता हिन्दू नारी के बारे में लिखा है। अपने पति से कष्ट सहकर जीने वाली अबला के रूप में नारी का चित्रण किया गया है। राधाकृष्णदास की दुखिनी बाला, राधाचरण गोस्वामी के सती चन्द्रावती जैसे इस काल की जो भी रचना हों उसमें नारी केवल शोषण का शिकार बन जाती हैं। प्रसाद युग में आते-आते लेखन की दिशा में थोड़ा-सा बदलाव आ गया। लेकिन यह बदलाय तो सुधार का कोई सूचक नहीं रहा। स्त्री को आदर्श रूप देने की कोशिश ही प्रसाद ने किया। श्रीमती मुकुलरानी सिंह के अनुसार-भारतेन्दु युग में नारी के आंशिक उदात्त रूप देने की कोशिश ही प्रसाद ने किया। श्रीमती मुकुलरानी सिंह के अनुसार "भारतेन्दु युग में नारी के आशिक उदात्त गुणों एवं महानताओं का चित्रण अत्यन्त अल्प मात्रा में हो सका है। इसके मूल में देश की राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियां मुखर थी। भारतेन्दु युग एवं द्विवेदी युग के नाटककारों की रचनाओं में कहीं पर स्त्री का अलग एक स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं उभरकर आया है। कहीं-कहीं ऐसा दिखाया गया है कि नारी मुक्ति की कोशिश कर रहे हैं।" स्त्री की हालत क्यों नहीं बदली, इनका कारण क्या है? इसका कोई समाधान अभी तक नहीं निकला। लेकिन यह बात सच है कि इतिहास निर्माता के रूप में साहित्यकारों ने हमेशा पुरुष को ही माना है।

मुख्य शब्द: ऐतिहासिकता, राष्ट्र, नारी, अस्मिता बोध, दृष्टिकोण।

प्रस्तावना

प्रसाद संपूर्ण भारत को एक राष्ट्र मानते थे। राष्ट्रीयता के संदर्भ में प्रसाद ने अतीत का गौरवगान किया है। यह एक व्यापक प्रक्रिया थी। इस गौरवगान ने समाज में स्त्री एवं पुरुष की भूमिकाओं को गढ़ा है। उनके नाटक में देखा जा सकता है कि उन्होंने नारी पात्रों को सीमित दायरे में रखकर उसकी पुष्टि की है। लेकिन पुरुष पात्रों को धीरोदात्त बताते हुए उसका वर्णन किया है। स्त्री को हमेशा घर में रखा है चाहे वह राज्य के लिए तलवार उठाती हो, आन्दोलन में हिस्सा त्यागपरक हो, यह पुरुष के लिए केवल अर्धांगिनी ही रही है। पुरुष को वीरवान, शक्तिमान मानते थे। प्रसाद ने अपने साहित्य द्वारा जिन आदर्श पात्रों को हमारे सामने रखा, इसके कारण बाद में जो सुधारवादी आन्दोलन भारत में हुआ, उसकी गति धीरे-धीरे मन्द पड़ गयी। इस प्रकार कह सकते हैं कि प्रसाद के नाटकों में एक प्रकार से सुधारवाद की प्रवृत्ति अवरूद्ध हो गयी। उन्नीसवीं सदी के सुधार आन्दोलन में स्त्री की स्थिति एक केन्द्रीय मुद्दा थी। सती प्रथा के विरुद्ध राजाराम मोहनराय, विधवा विवाह के समर्थन में विद्यासागर, विवाह सम्बन्धित कानून एवं अन्य सम्बन्धित विषयों कानून एवं अन्य सम्बन्धित विषयों पर ब्रह्म समाज ने विशेष बल दिया था। इतिहासकार पार्या चटर्जी ने लिखा है- "बीसवीं सदी के आते-आते थे सभी सुधारवादी प्रयन्त अचानक कमज़ोर पड़ गए सार्वजनिक परिदृश्य से इन मुद्दे को हाशिए में में डाल दिया।" [2]

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में प्रसाद ने नारी मुक्ति की बात की है। लेकिन जहां तक यह मुक्ति इसमें साकार हो गया यह चर्चा का विषय है। प्रसाद एक ओर भारतीय संस्कृति की रक्षा चाहते बे अथवा परंपरा की रक्षा के लिए अलका, पद्मिनी, देवसेना, मल्लिका आदि नारी पात्रों को आदर्श रूप दे दिया। दिया। पुरुष ने पहले ही स्त्री को एक निश्चित दायरे में बन्ध किये थे कि स्त्री-पुरुष के पीछे चलने वाली अनुगामिनी मात्र है। "ध्रुवस्वामिनी' में एक हद तक नारी अपने को समाज के कटघरे से निकलने को कोशिश की है। नारीवाद को पश्चिम का देन मान जाता है जैसे- पूर्व-आध्यात्मिकता-भीतर (घर)-स्त्री। स्त्री को घर का चीज़ माना गया है। स्त्री की भूमिका केवल घर के अन्दर ही सीमित होती है। पुरुषों को बाहर का काम संभालना है। उसी प्रकार पूर्व का संबन्ध आध्यात्मिकता से है। पश्चिम का सम्बन्ध भौतिकता से है।" [3] स्त्री को बाहर जाने की अनुमति नहीं है।

***Corresponding Author:** डॉ. बबिता के

वह तो केवल भीतर का काम संभालती है।
प्रसाद ने विदेशी सभ्यता के समक्ष भारतीय सभ्यता को महत्त्व देने की कोशिश की। इसी महत्त्व को और पुष्ट करने के लिए उन्होंने कार्नेलियां के मुँह से भारतीय संस्कृति का गुणगान करवाया है- "अरूण यह मधुमय देश हमारा। जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा"४ सामान्य तौर पर प्रसाद के ऐतिहासिक के नाटकों को दो दिशाओं मे मोड़ सकते हैं-

i). अतीत का गौरवगान
ii). अध्यात्मिकता ।

प्रसाद के समग्र साहित्य में अतीत का गौरवगान देख सकते हैं। उसके द्वारा यह वर्तमान की रक्षा करना चाहते थे। स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियों को चुनकर भारतीयता का गुणगान किया। परम्परा की रक्षा के लिए स्त्री को स्टीरियो टैप बनाकर एक कोने में रख दिया। उनका काम था केवल घर संभालना। आधुनिक राष्ट्रवादियों ने भारत के अतीत का गौरवगान करके यह स्थापित करना चाहते हैं कि सब कुछ परंपरागत है। बदलाव तो केवल कपड़े जीवन शैली तथा प्रथाओं में है- "The new politics of national-ism glorified Indias past and tendedto defend everhthing tradi-tional, all attempt to change customs and life styles began to be seen as the aping of western manners adn were there by regards with suspicion, Consequently nationalism fostered distinctly con-servative attitude toward social beliefs and practices. The move-ment towards modernization was stalled by nationalist politics" [4]
प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक नाटकों में स्त्रियों को आध्यात्मिकता का प्रतीक माना है। स्त्री को पवित्रता के शिखर पर ही स्थापित करते हैं इस तरह देश की आध्यात्मिकता महानता का भार स्त्री पात्र ढोते हैं। सुधार के संकल्प के बावजूद छवि संरचना के स्तर पर परंपरा का समर्थन ही मिलता है। उनके अनुसार पुरुष इतिहास निर्माता है उनकी मानसिकता ऐसी बन गई कि राज्य का भागदौड़ केवल पुरुष ही सँभाल सकता है। स्वी नहीं और स्त्री के साथ कोमल भावों को जोड़कर देखा जाता है। इसका उदाहरण 'अजातशत्रु' नाटक के बीसवीं ने उक्त संवाद द्वारा दिया है-बीसवीं का कथन है- "यही जो जानती कि नारी का हृदय कोमलता का पालना है, दया का उद्गम है, शीतलता की छाया है और अनन्य भक्ति का आदर्श है तो पुरुषार्थ का ढोंग क्यों करती।" प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों की नारियों शिक्षित है, विवेकशाली है। राष्ट्र के राजनीतिक मामलों में वह पुरुष की उत्प्रेरिका रूप में ही चित्रित है। प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों में साथ शारण प्रजा भी विवेकशाली है। 'मन्दाकिनी' नामक एक साधारण पात्र के मुँह से प्रसाद ने राजनीति का निर्वचन इस प्रकार दिया है- "राजा अपने राष्ट्र की रक्षा करने में असमर्थ है तब भी उस राजा की रक्षा होना ही चाहिए। बचोगे तो राष्ट्र और सम्मान भी बचेगा नहीं तो सर्वनाश।"६ प्रत्येक नारी पात्र तो देश की भलाई चाहती है। 'स्कन्दगुप्त' नाटक में देवसेना अपने देश के लिए भिक्षा तक मांगती है। इस पात्र द्वारा प्रसाद यह बताने की कोशिश करते हैं कि भारतीय स्त्री की आत्म गौरव महान है। उसे देवी, लक्ष्मी और माँ के पद पर प्रतिष्ठित किया है। 'चन्द्रगुप्त' नामक नाटक में चाणक्य ने अलका को लक्ष्मी की संज्ञा दी है। अपने ऐतिहासिक नाटकों में प्रसाद ने जितने नारी पात्रों को हमारे सामने रखा है, वे सब एक-एक आदर्श पात्र हैं। प्रसाद ने यह निर्वचन दिया है कि एक अच्छे संस्कृति में स्त्रियाँ ऐसी होनी चाहिए क्योंकि वे जानते थे कि परंपरा की रक्षा स्त्रियों के हाथ में सुरक्षित है। जैंडर (लैंगिकता) सामाजिक संरचना के मानदण्डों से बनाए गए मानसिकता के आधार पर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों के स्त्री और पुरुष को इस तरह वर्गीकृत किया जा सकता है-

पुरुष-पात्र	स्त्री-पात्र
स्वकेन्द्रित	सेवा
आत्मविश्वासी	क्षमा
विश्व में अपना स्थान	उदारता
आधिपत्य प्रधान	त्याग
पैतृक	कर्तव्य

इनके अनुसार स्त्री-पुरुष संबन्धित सामाजिक संरचना की दृष्टि में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक नाटकों में स्त्रियों का जो चित्रण किया है, उसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं दिखाई देता विशेषकर 'अजातशत्रु' की मल्लिका और स्कन्दगुप्त की मल्लिका में।

निष्कर्ष

इस तरह साहित्य में हमेशा ही इतिहास निर्माता के रूप में पुरुष को दिखाया जाता है। भारतेन्दु युग से लेकर प्रसाद युग तक के नाटकों में देखा जा सकता है कि इन नाटक पुरुष प्रधान रही है। स्त्रियां किसी संघर्ष के समाधान के लिए बनाए गए माध्यम हैं। पुरुष को वीरता, शौर्य, नियंत्रण आदि गुण दिया गया। स्त्री को ममता, दया, स्नेह, सहिष्णुता, उदारता, क्षमा आदि भावों में खड़ा कर दिया। 'परंपरा का पालन ही जब स्त्री का परम कर्तव्य समझा जाता था जब वे उसे जोड़ने की भूमिका बांधती हैं। अजगर की कुण्डली के समान स्त्री के व्यक्तित्व को कस कर चूर-चूर कर देने वाले अनेक सामाजिक बन्धनों को तोड़ फेंकने में उनका जो प्रयास लगा होगा उसका मूल्यांकन आज संभव नहीं है। कह सकते हैं कि प्रसाद ने राष्ट्र के संदर्भमें स्त्री को जोड़ने के लिए उसे देवी, पत्नी, माता, पुत्री, बहन आदि रूप दे दिया। आदर्श राष्ट्र के निर्माण को व्यक्त करते हुए 'स्कन्दगुप्त' नाटक में प्रसाद कहते हैं- "राष्ट्र और समाज मनुष्य के द्वारा बनते हैं उन्हीं के सुख के लिए। जिस राष्ट्र और समाज से हमारी सुख शांति में बाधा पड़ती है, उसका तिरस्कार करना होगा। इन संस्थाओं के उद्देश्य है-मानवों की सेवा" एक ओर उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा राष्ट्र के निर्माण के लक्ष्य मानव सेवा कहा गया। इस लक्ष्य में उन्होंने पुरुष को एक स्वतंत्र व्यक्तित्व दिया और स्त्री को उसकी अनुगामिनी मात्र बनाया।"७ 'अजातशत्रु' की 'शक्तिमति' का कथन है- "यदि पुरुष सभी कामों को कर सकता है तो स्त्रियाँ क्यों न करें? क्या स्त्रियों का सब कुछ पुरुषों की कृपा से मिली हुई भिक्षा मात्र है?"९ इन प्रश्नों के उत्तर आज भी हम ढूँढ रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नन्ददुलारे वाजपेयी- प्रसाद के नाटक, पृष्ठ संख्या 1
2. श्रीमती मुकुलरानी सिंह- प्रसाद के नाटकों में नारी पात्र, पृष्ठ संख्या 24
3. डॉ. एस. पद्मप्रिया- आध्यात्मिक राष्ट्र की आधुनिक मीरा, पृष्ठ संख्या 2
4. चन्द्रगुप्त- पृष्ठ संख्या 100
5. The Nation & its Fragments, Partha Chatargee, पृष्ठ संख्या 766
6. जयशंकर प्रसाद- अजातशत्रु, पृष्ठ संख्या 112
7. जयशंकर प्रसाद- ध्रुवस्वामिनी, पृष्ठ संख्या 30
8. डॉ. एस. पद्मप्रिया- आध्यात्मिक राष्ट्र की आधुनिक मीरा, पृष्ठ संख्या 4
9. जयशंकर प्रसाद- स्कन्दगुप्त, पृष्ठ संख्या 55
10. जयशंकर प्रसाद- अजातशत्रु पृष्ठ संख्या 50